जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५० वे ❖ अंक १२ वा ❖ ऑगस्ट २०१९ ❖ वीर संवत २५४५ ❖ विक्रम संवत २०७६

या अंकात

	पान नं.
● वाचकांचे मनोगत.....	१५
● जन जागरण अभियान : आत्मध्यान	१९
● कव्हर तपशील	२४
● ''उवसग्गहंर'' सामुहिक पठण, पुणे	२५
● जन्म जयन्ती अर्थात अरुणोदय	३१
● जैन धर्म और भारतीय संस्कृति के विश्वदूत श्री. वीरचंद राघवजी गांधी	३७
● औचित्य जाणने काम कर	३६
● अंतिम महागाथा ※ ६ विद्रोही राजकुमार	३९
● कडवे प्रवचन	४५
● दशम पापस्थानक : राग	४९
● सुखी जीवन की चाबियाँ अन्तरंग शत्रु-जय : २-क्रोध	५३
● राग द्वेष से बचनेवाला : सद्गुरु सौभाग्य	५८
● पेड लगाओ	५९
● हे गौतम समय मात्र का भी प्रमाद मत करना	६९
● रक्षाबंधन : अटूट विश्वास का बंधन	७१
● डायमंड डायरी	७२
● सिद्धांतों के अनुरुप आचरण आवश्यक	७४
● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	७५
● सच्चे धर्म प्रेमी	७५
● व्यक्तिमत्व निखारने के १४ उपाय	७७
● भक्तामर : एक दिव्य अनुभूति	७८
● संयम जीवनावश्यक	७९
● मैत्रीचा मुरांबा	८३
● गुरुकुल में वास	८५
● हास्य जागृति	८६
● जैन धर्म ''अरिहंत'' से पहचाना जाता है	८७
● कोशिश न कर	८७
● पूना ब्लाईंडस् मेन असोसिएशन, पुणे	८८
● जैन सोशल ग्रुप, पुणे	८९
● अरिहंत जागृती मंच, पुणे	९१
● सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे	९२
● श्री कांतीलाल लुंकड फाऊंडेशन, पुणे	९५

- डॉ. मंजुश्रीजी म.सा. अमृत महोत्सव ९६
- श्री. राकेश छाजेड, पुणे ९७
- श्री. संकेत देसर्डा, पुणे ९७
- अल्पसंख्यांक छात्रवृत्तीयाँ १०३
- अहिंसा परमो धर्म – डाक तिकीट १०३
- रविनंदा I गृह प्रकल्प, पुणे १०४
- श्री सम्मेतशिखर तीर्थयात्रा १०५
- त्यागीजनों के उपचार हेतु निवेदन १०५
- आत्मपुरुष : आचार्य आनंदऋषिजी १०६
- ज्ञान और आचरण एक विश्लेषण १०८
- छात्रवृत्ती एवम् आर्थिक सहयोग, जयपूर १११
- श्री प्रीतिसुधाजी शिक्षण फंड – नाशिक ११२
- सूर्यदत्ता ग्रुप, पुणे ११३
- जागृत विचार ११६
- पूज्य गुरुदेव श्री. राकेशभाई पूना ११७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ **मो. संजय:**९८२२०८६९९७ **सुनंदा:**९४२३५६२९९१, **www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९११९४०९, ९४२२८३२८४९
- **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी, बार्शी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३०००००८१
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५ / ९३७३६८२१३७
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **सदाशिव पेठ परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत- मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **बीड –** श्री. महावीर पन्नालालजी लोढा, मो. ९४२०५५६३२५
- **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- **मुंबई** खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- **श्रीरामपूर** –श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **बारामती**- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२६९५४३३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

॥ वाचकांचे मनोगत ॥
जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण...

जैन जागृति - गोल्डन ज्युबिली वर्षातील पहिला अंक, सप्टेंबर २०१८ पर्युषण अंका पासून वाचकांचे मनोगत 'जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण' या सदरात दरमहा आचार्य भगवंत, साधु-साध्वी महाराज, समाज बांधव यांचे आलेली पत्रे जैन जागृतित प्रकाशित केली जात आहेत. या सदरात प्रकाशित करण्यासाठी बरीच पत्रे, संदेश आमच्याकडे आली आहेत. यापैकी दरमहा काही पत्रे प्रकाशित केली जातील. सर्व पत्रे क्रमशः प्रसिध्द केले जातील. **- संपादक**

श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.
जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद

बेंगलुरु (कर्नाटक) में विराजित रोचक व्याख्यानी श्री ज्ञानमुनिजी (आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के शिष्य) ने मेरे माध्यम से आपको जैन जागृति की स्वर्ण जयन्ती की मंगलकामनाएँ भिजवाई है । उन्होंने जैन जागृति के सम्पादन कौशल की मुक्त मन से प्रशंसा की और कहा कि पत्रिका अपने नाम के अनुरुप जैन समाज में जागृति कर रही है । उन्होंने यह भी अपेक्षा की कि जैन समाज और साधु संस्था में जहाँ कहीं विसंगतियाँ और विडम्बनाएँ हों तो उनके निवारण के लिए सकारात्मक दृष्टि के साथ कलम चलाई जानी चाहिए तथा तथ्यात्मक और रचनात्मक आलोचना करनेवाले श्रेष्ठ लेखकों की कलम का सम्मान भी होना चाहिए । श्रध्देय श्री ज्ञानमुनिजी ने आपके पिताजी को याद किया और उनके सारस्वत कार्य को आपके द्वारा सतत व श्रेष्ठ रुप में आगे बढ़ाने के लिए शुभाशीर्वाद दिया है ।

श्री ज्ञानमुनिजी म.सा. के आज्ञासे
स्नेहाधीन - डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई

सबको मार्गदर्शन करती रहे

आदरणीय, माननीय श्री. संजयजी एवम् समस्त जैन जागृति परिवार, पुणे

सादर जय जिनेंद्र, नमस्कार । हम शुरुवात से ही 'जैन जागृति' प्रेमी है । हमारी अपनी 'जैन जागृति' देखते देखते सुवर्ण महोत्सवी Golden Jubilee वर्ष में पदार्पण कर रही है । यह सुनकर पढकर अत्यंत आनंद एवम् प्रमोद हुआ है हमें और पूरे जैन उद्योग समुदाय को।

हमें याद है जब शुरुआत हुई थी १९६९ में तब हमारे अपने भाईसाहब स्व.श्री. कांतीलालजी चोरडिया कई बार जलगाव पधारते रहते थे । हमें मिलते रहे जैन जागृति उनका श्वास था, उनका धैर्य था, उनकी एक विशाल सोच थी कि इस जैन जागृति के माध्यम से पूरे समाज की आध्यात्मिक, धार्मिक, व्यावहारिक, परंपरागत विषयों को अच्छी तरह समाज मन को पढने मिले । जिसमें अपनी धार्मिक, व्यापारिक गतविधियों के बारे में समाज के हर स्तर पर उन्हें पूरी तरह से मालूमात हो, जैसे दशहरा, दिवाळी पूजन, होळी, धार्मिकता, संवत्सरी, भ. महावीर और सभी तीर्थंकरों के चारित्र, जिनशासन के जो भी तीर्थक्षेत्र, यात्राएँ वगैरे सबके बारे में विस्तृत जानकारी, मालूमात अपने इस 'जैन जागृति' के माध्यम से पूरे जैन समाज को मिले और मिलती भी रही है । अभिनंदन !

आज भी उनके जाने के बाद भी आप जैन जागृति परिवारने वही उत्कृष्टता बरताई है, ऐसा भी कह सकते है कि स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडियाजी का स्वप्न पूर्ण रुप से आप सभी साकार कर रहे हो और देखते

देखते ५० वर्ष पुरे हो रहे है ।

वैसे हम अपना अनुभव भी यहाँ प्रस्तुत कर रहे है । सन २०१६ में जैन जागृति में एक सुंदरसे फोटो के साथ चि. डॉ. संकेतजी गांधी का परिचय पढने को मिला व M.S. Artho. Gold Medalsit है ऐसा पढने में आया और हमारी पोती चि.सौ.का. मोना शिरीष ओसवाल का विवाह संबंध बडी अच्छी तरह उनके साथ हो गया । इसी तरह २०१७ में हमने हमारे चि. मेहुल शिरीष चोरडिया ओसवाल की भी पूरी मालुमात अपने जैन जागृति में फोटो सह दी थी और हमारे चि. मेहूल का भी विवाह चि.सौ.का. विभा शाह से हो गया। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे आपके जैन जागृति के माध्यम से हुवे है, होते रहेंगे, हो रहे है बधाई बधाई !

हम सभी जलगाववासी, जैन उद्योग समूह और खासकर हमारा अपना चोरडिया जैन परिवार को जैन जागृति परिवार को शुभाशिष दे रहे है और आपका अभिनंदन, कौतुक करते हुये यह अपनी जैन जागृति Dimond की तरह हर सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक विषयों में सबको मार्गदर्शन करती रहे ।

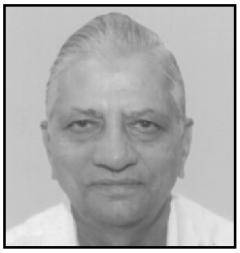

आपका अपना नम्र
दलुभाई चोरडिया जैन
अध्यक्ष – श्री सकल जैन संघ, जलगांव
जैन उद्योग समुह, जलगाव
मो. : ९४२२२७७७४४

'जैन जागृति'चा ५० वर्षांपासून वाचक

समाज माध्यमांचा वापर करताना वाचन संस्कृती जपली गेली पाहिजे, यासाठी मी स्वत: आग्रही आहे. 'जैन जागृति' या मासिकाचा मी सुरुवातीपासून वाचक आहे. या मासिकाला आता पन्नास वर्षे पूर्ण होत आहेत. 'जैन जागृति'च्या रौप्यमहोत्सवी कार्यक्रमावेळी मी विशेष अतिथी होतो, तर माझे बंधू बंकटलाल कोठारी हे कार्यक्रमाचे अध्यक्ष होते. समाजाला पूरक अशाच गोष्टी समाजापर्यंत पोहोचवण्याचे तत्त्व या मासिकाने जपले आहे.

आजच्या इंटरनेटच्या जमान्यात एखादे मासिक सातत्याने चालू ठेवणे अवघड आहे; पण ही धुरा 'जैन जागृति'ने अत्यंत नेटाने सांभाळली आहे. पुढच्या काही महिन्यांतच 'जैन जागृति' सुवर्ण महोत्सव साजरा करणार आहे, हे कौतुकास्पदच आहे. या मासिकाचे हे अखंडत्व शंभरीकडे नक्कीच वाटचाल करीत आहे, याबद्दल मला अभिमानही आहे. त्यासाठीच माझ्या या मासिकाचे संपादक संजय चोरडिया व सौ. सुनंदा चोरडिया यांना शुभेच्छा आहेत.

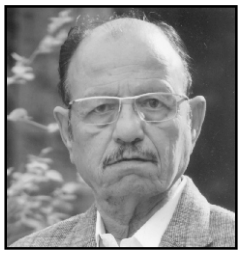

प्रेषक : श्री. विजयकांतजी कोठारी, पुणे
अध्यक्ष : जैन श्रावक सकल संघ, पूना
मो. ९८२३०८२१५२

प्रत्येक घरात आदराचे स्थान

जैन जागृति म्हणजे खऱ्या अर्थाने गेल्या ५० वर्षात जैन समाजात जागृती करणारे अत्यन्त अभ्यासपूर्ण लेख असणारे समाजातील धार्मिक व सामाजिक कार्यांना प्रसिद्धी देणारे संपूर्ण देशभर लोकप्रिय असणारे पुण्यातील पहिले जैन मासिक. प्रा. कांतीलालजी चोरडिया हे एक अत्यन्त अभ्यासु, निष्णात, मितभाषी आणि समाजाविषयी आस्था असणारे व्यासंगी व्यक्तीमत्व, त्यांचा माझा जवळून परिचय होता. मी ज्या कॉलेजमध्ये प्राध्यापक होतो त्या चिचंचवडच्या संघनी केशरी महाविद्यालयात सुमारे ३० वर्षापूर्वी व्याख्यानासाठी त्यांना मी निमंत्रित केले होते. जैन तत्त्व ज्ञानावर अत्यन्त अभ्यासपूर्ण असे प्रबोधानात्मक व्याख्यान त्यांनी दिले. जैन जागृतिच्या प्रचारासाठी अत्यन्त परिश्रम घेऊन त्यांनी या अंकाला भारतभर लोकप्रिय केले. या अंकातील लेखांची

मांडणी, बातम्या तसेच विविध प्रबोधनात्मक लेख यामुळे वाचकांना अंक वाचावासा वाटतो. जैन जागृतीला घराघरामध्ये आणि जैन माणसाच्या मनामनामध्ये आदराचे स्थान आहे. प्रा. कांतीलालजी चोरडिया यांच्यानंतर त्यांचे सुपुत्र संजयजी और सुनंदाजी यांनी जैन जागृति पुढे नेटाने चालविण्याची जबाबदारी सुंदर रितीने आणि यशस्वीपणे पार पाडत आहेत. सर्वच संप्रदायातील प्रमुख बातम्यांना प्रसिद्धी देऊन त्यांनी जैन एकतेचा उद्घोष केला आहे. जैन जागृतीच्या या सुवर्ण महोत्सव वर्षा निमित्त हार्दिक अभिनंदन व पुढील वाटचालीस हार्दिक शुभेच्छा !

प्रेषक : प्रा. डॉ. अशोकुमार पगारिया, पुणे
मो. ९४२२०३६८३१
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ऑल इंडिया श्वे.स्था.जैन कॉन्फरन्स, नवी दिल्ली

जैन जागृति संस्काराची अनुभुती

खरंतर लहानपणापासून वाचनाचे संस्कार केले ते जैन जागृतिने. अभयकुमार, भ. महावीर स्वामी आणि अश्याच अनेक अनभिज्ञ विषयांवर, इतिहासावर लिहून बाल वाचकांच्या संवेदनशील मनावर संस्काराची बाग फुलवली. लहानपणी वळती सारख्या अगदी छोट्या गावात अल्प जैन समाज. पण तरीही जैन जागृतिचा वाचक वर्ग जैनेतर ही असायचा. किराणा दुकानात येणारे दादांचे, वडिलांचे मित्र, अनेक वयोवृध्द लोक या अंकाची आतुरतेने वाट पहायचे. अजूनही आठवतेय मला अंक सर्वात आधी कोणाला वाचायला मिळेल यावर आम्ही भावंडे भांडायचो. पोस्टमन दिसला की कोण आनंद व्हायचा. वीस वर्षापूर्वी मा. श्री. धनराजजी भन्साळी यांनी ठेवलेल्या बहू बेटी या लेखास प्रतिक्रिया स्पर्धा ठेवली होती, त्यात मला प्रथम क्रमांक मिळाला होता आणि हा क्षण मी खुद्द श्री. धनराजजी भन्साळी यांच्या सोबत साजरा केला. त्यांनी स्वत: मला घरी बोलावून माझा त्यावेळी आदरसत्कार केला होता. खरंतर ते वयाने आणि मानाने खूप मोठे पण मी लिहिलेला लेख त्यांना आवडला आणि त्यांनी त्याचे कौतुक केले, हे सारं जैन जागृतिमुळे शक्य झाले. असे अनेक कौतुकाचे सोहळे जैन जागृतिने साजरे केले आहेत. मी पाठवलेले अनेक लेख, कविता वेळोवेळी अंकात प्रकाशित करुन प्रोत्साहन दिले आहे. त्यासाठी आभार न मानता, मी जैन जागृतिच्या ऋणातच राहू इच्छिते. वाचन संस्कृती जैन जागृतिने टिकवली, वाढवली. जैन जागृतिने खरंतर माझ्यासारख्या अनेक जैन लेखिकांना मानाचे व जैन बांधवांच्या हक्काचे व्यासपीठ उपलब्ध करुन दिले आहे. पन्नासव्या वर्षात पदार्पण खरतरं खूप मोठा पल्ला जैन जागृतिने गाठलाय, पण हा फुलस्टॉप नक्कीच नाही. अजूनही घोडदौड बाकी आहे. सफलतेच्या अनेक शिड्या अश्याच पार कराव्यात.

संजयजी, सुनंदाजी चोरडिया यांना त्यांच्या पिताश्रींचा हा जो अनमोल ठेवा, वारसा मिळाला आहे त्यात अशीच वृध्दी होवो, हिच सदिच्छा ! सर्व गांधी परिवाराच्या वतीने खुप खुप शुभेच्छा !

प्रेषक :
सौ. सीमा शिरीष गांधी,
पिंपरी, पुणे.
मो. ९९२२९५७५११

जैन जागृति

- **सप्टेंबर २०१९ – पर्युषण अंक**
- **ऑक्टोबर २०१९ – गोल्डन ज्युबली अंक**

आजच या भव्य अंकाना जाहिरात द्या.

आत्मानुभूति का स्वर्णिम अवसर पुणे चातुर्मास २०१९ : आत्म-ध्यान साधना शिबिर

जन-जागरण अभियान : आत्म ध्यान

प्रेषक : आत्मयोगी श्री शिरीष मुनिजी म.सा. (पुणे चातुर्मास)

आचार्य श्री शिवमुनिजी

मंत्री श्री शिरीषमुनिजी

सृष्टि का अटल सत्य है - ''जन्में हैं तो मरेंगे''। जन्म और मृत्यु पर हमारा वश नहीं है। हमारे वश में केवल जन्म और मृत्यु के बीच एक घटना 'जीवन' है। भारतीय अध्यात्म में जीवन जीने के लिए कई तरीके सुझाए गए है। इन सब में सर्वमान्य है : जीवन की महत्ता लम्बाई में नहीं गहराई में है।

आशय है जीवन को ऐसे जिये कि प्रत्येक क्षण का पूरा रस निचोड़ लें। पैरों में थिरकन हो। देह में तरंग हो, प्राणों में उमंग हो। अतीत या भविष्य के सम्बन्ध में ज्यादा सोचेंगे तो जीवन बोझ बन जाएगा। ऐसा शख्स जीवन जीता नहीं, जीवन को ढोता है। दुर्भाग्य से आज यही हो रहा है। आपाधापी के वर्तमान दौर में मनुष्य मशीन बन गया है। इसका दुष्परिणाम है कि अधिकांश लोग आज ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, हृदय रोग, माइग्रेन, स्पोंडलाइटिस या घुटनों के दर्द जैसे शारीरिक रोगों से परेशान हैं। जीवन में जो कथित रूप से सफल हैं वे भी निद्रा, तनाव, अवसाद, क्रोध, ईर्ष्या और मान-अपमान से हैरान-परेशान हैं।

आत्म ध्यान के अन्वेषक ध्यान गुरु डॉ. शिवमुनि जी कहते हैं : आप जन्मे थे तब इंसान थे। फिर आपकी ब्रांडिंग हुई। आपको नाम मिला। एक धर्म मिला। यही आपकी पहचान बन गया। इनके साथ सारे झंझट शुरु हुए। आपसे कहा गया - शिक्षा प्राप्त करो, पैसा कमाओ, विवाह करो, माता-पिता बनो। यह सब करते हुए जिन्दगी एक रुटीन बन गई। आप भूल गये कि मूलतः आप इंसान है, रोबोर्ट नहीं। आपकी देह में परमात्मा का अंश है जिसे आत्मा, रुह या Soul कहते है। आत्मा वर्णनातीत है। यह बुद्धि से परे है। इसका कोई रूप-रंग नहीं है। आकार नहीं है। आत्मा न स्त्री है और न ही पुरुष। पर यही सत्य है। यही शाश्वत है। शरीर, हड्डी, मांस और त्वचा आदि से बना है जिसका हश्र है - ''हाड जले ज्यों लाकडी, केश जले ज्यों घास।'' जी हाँ जीवन पर्यन्त जिस शरीर को खूब सजाया सँवारा, माता-पिता, पत्नी-बच्चे, भाई-बहन और मित्र परिजन जिससे हमेशा लिपटे रहते थे उससे आत्मा निकलते ही वे निर्जीव काया को थोड़ी देर भी घर में रखना नहीं चाहते।

भगवान महावीर ने इसीलिए कहा - आत्मा के अतिरिक्त जो कुछ भी है, यह आपका नहीं है। यह शरीर, यह परिवार, यह धन, यह पद, यह प्रतिष्ठा, यह व्यापार-व्यवसाय सब क्षणिक संयोग है।

विलक्षण बात यह है कि क्षणिक लोभ-लालच, लालसा-प्रलोभन और मोह-माया की गिरफ्त में फंसा सृष्टि का हर प्राणी सुख, शांति और आनंद पाना चाहता है। वह धन कमाना चाहता है। पद और प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहता है ताकि सुख-साधन जुटा सके। लेकिन क्या सुख मिलता है? जिस सुख के पीछे आप जिन्दगी भर दौडते हैं उसे प्राप्त कर लेने के बाद आपको पता चलता है कि अरे, यह सुख है ही नहीं, असली सुख तो

वह है जो आपको आनंद से भर दे, जो आपको शांति में ले जाए। जिसे प्राप्त करने के बाद आप कह उठें – बस आपको और कुछ नहीं चाहिए।

क्या ऐसा परमानन्द... क्या ऐसी शांति मिलती है? जी हाँ मिलती है। परमानन्द और परम शांति आत्म ध्यान से मिलती है। आप सभी आत्म ध्यान करें, अभी उसकी अनुभुति होगी। जीवनपर्यन्त आनन्द में रहने की कला है –''आत्म ध्यान''।

* आपके जीवन में चाहे जितनी समस्या हो, उसके साथ जीने की कला सिखा देगा – आत्म ध्यान।

* आत्म ध्यान के साधक की बुध्दि तीक्ष्ण हो जाती है, चिंता और तनाव से उपजे रोगों से मुक्ति मिल जाती है।

* आत्म विश्वास जाग्रत होने से साधक असाधारण काम भी आसानी से कर लेता है।

* आत्म ध्यान हमारी यादों को क्लीन कर देता है। चित्त से सारे ऑब्जेक्टस हट जाते हैं और चेतना शेष रह जाती है।

* संक्षेप में कहें तो आपको आपकी आत्मा रुबरू करवाता है – आत्म ध्यान। वह आत्मा जिसके कण–कण में वैसे ही आनन्द समाया हुआ है जैसे जल के कण–कण में शीतलता।

विडम्बना यह है कि हम सुख की खोज में बाहर भटक रहे हैं जबकि परमानंद का स्त्रोत आत्मा हमारे भीतर है, कबीर ने इसीलिए तो कहा था –

कस्तूरी कुण्डल बसे, मृग ढूंढे वन माहीं।
ऐसे घट में पीव है, दुनिया जाने नाहीं।।

(मृग की नाभि में कस्तूरी होती है। मृग यह नहीं जानता। वह यही समझता है कि कहीं बाहर से कस्तूरी की सुगंध आ रही है। वह उस सुगंध को खोजने के लिए सारे वन में दौड़ता है। दौड़ते–दौड़ते ही उसकी मृत्यु हो जाती है।)

तो आईए, इस बेकार की भाग–दौड़ को क्षणिक विश्राम दें और आत्म ध्यान साधना करके जानें कि जीवन क्या है? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है?

परमात्मा – मय होने का आध्यात्मिक विज्ञान आत्म–ध्यान

आनंद, शांति, सुख, समृद्धि और समाधान प्रत्येक व्यक्ति की स्वाभाविक अपेक्षाएँ है। इन्हीं अपेक्षाओं की पूर्ति के लिये प्रत्येक मानव दिन–रात श्रम करता है, भाग–दौड़ करता है, विविध साधनों–संसाधनों का संग्रह करता है। परन्तु उसकी अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो पाती। सुख के साधनों के अंबार लगाकर भी उसे सुख प्राप्त नहीं हो पाता।

आत्मज्ञानी श्रद्धेय शिवाचार्य श्री फरमाते हैं :

सुख, साधनों में नहीं है। सुख, साधना में है। आनंद, पदार्थ में नहीं है। आनंद, स्व–आत्मा में है। शांति, ब्राह्य–भ्रमण में नहीं है। शांति आत्म–रमण में है। समृद्धि, संचय में नहीं है। समृद्धि, सामायिक और ''मैं आत्मा में है। समाधान, पर–ध्यान में नहीं है। समाधान, आत्म–ध्यान में हैं।

''आत्म–ध्यान'' एक आध्यात्मिक उत्क्रांति है। जिह्वा पर रखा गया मधु–बिन्दु जैसे तत्क्षण मुख में माधुर्य उत्पन्न कर देता है, वैसे ही ''आत्म–ध्यान'' का प्रथम क्षण ही साधक के मानस को आत्म–मधु–माधुर्य से भर देता है, स्वर्ग जन्नत या हैवन (Heaven) मृत्यु के बाद का सच हो सकता है, पर ''आत्म–ध्यान'' से टूटती कर्म–श्रृंखलायें और आत्मानंद का बहता प्रवाह इसी क्षण का सच है। प्रतिदिन प्रवचन के पश्चिम–पलों में श्रध्देय शिवाचार्य श्री मात्र पाँच मिनट के लिए ''आत्म–ध्यान'' का एक छोटा सा प्रयोग करवाते हैं। वह छोटी सी समाधि–बेला ही सहस्त्रों मुमुक्षुओं के लिये ''आत्म–ध्यान'' के चार और सप्त दिवसीय शिबिरों के लिए प्रवेश–द्वार बन चुकी है।

दुर्लभातिदुर्लभ संयोग आज सर्व सुलभ है। जिन नहीं पर जिनकल्प श्रध्देय शिवाचार्य श्री आज सदेह इस भूतल पर विहरमान है। यह इस भूतल का सौभाग्य है।

इस सौभाग्य में सहभागी होने के लिए प्रत्येक मुमुक्षु आमंत्रित हैं।

आईये, ''आत्म-ध्यान'' में डुबकी लगाइये और इस अमृत को प्राप्त कर लीजिये जो कभी आप से दूर था ही नहीं।

क्या है आत्म ध्यान?

सत्य की शोध है – आत्म ध्यान।
स्व-पर का भेद है – आत्म ध्यान।
सत्य में स्थित होना है – आत्म ध्यान।
जीव पर श्रद्धा करना है – आत्म ध्यान।
स्व-का स्व में स्थित होना है – आत्म ध्यान।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम की साधना है – आत्म ध्यान।
जीव और अजीव का भेद – विज्ञान है – आत्म ध्यान।
जीव का जीव के स्वभाव में स्थित होना है – आत्म ध्यान।
व्यवहार सम्यक्त्व से निश्चन सम्यक्त्व की साधना है – आत्म ध्यान।
अनादि के मिध्यात्व को तोडकर सम्यक्त्व में स्थित होना है – आत्म ध्यान।

ध्यान गुरु डॉ. शिवाचार्य श्री जी (डी.लिट्)

श्रमण संघ के आचार्य डॉ. शिव मुनि (डी.लिट्) बचपन से ही जिज्ञासु थे। एक सम्पन्न वैश्य परिवार में जन्में शिवकुमार (दीक्षा के पूर्व नाम) किशोर उम्र में ही यह सोचकर बैचेन रहने लगे थे कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? जीवन क्या है? कब तक हूँ? मृत्यु क्या है? मुक्ति क्या है? संयुक्त परिवार चाहता था कि वे शिक्षा पूरी करें, उनका विवाह हो और व्यापार व्यवसाय सम्भाले। शिवकुमार ने अंग्रेजी और दर्शनशास्त्र में पोस्ट ग्रेज्युएशन की डिग्री हासिल की। शिक्षा काल में ही उन्हें ५१ दिवसीय स्टडी टूर के लिए अमरिका, कॅनडा, इंग्लैण्ड और कुवैत जाने का मौका मिला। सन १९७२ में ३० वर्ष की उम्र में परिवार से दीक्षा लेने की अनुमति मिली तो वे हो गए शिवमुनि।

लीक से हटकर सोचने वाले शिवमुनि ने भारतीय धर्मों में 'मुक्ति की अवधारणा-विशेष जैन धर्म संदर्भ में' विषय पर पाँच वर्षों तक शोध किया। उन्हें पीचडी की उपाधि मिल गई। यह शोध करते हुए डॉ. शिवाचार्यजी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सभी धर्मों में कॉमन है ध्यान। ध्यान अनुभूति है जो किताबों से नहीं सिद्ध होता। यह जानकर डॉ. शिवाचार्यजी ने अपने चातुर्मास को भारत भ्रमण में बदल डाला। तीन दशक तक वे हर उस जगह पहुँचे जहाँ ध्यान पर शोध और शिबिर हो रहे थे। विभिन्न विधाओं के गुरुओं के सानिध्य में उन्होंने ध्यान साधना की। नासिक में दो महीने की एकांत साधना के दौरान डॉ. शिवाचार्यजी को भगवान महावीर की ध्यान साधना के सूत्र मिले। डॉ. शिवाचार्यजी ने ज्ञान के बिखरे मोतियों को पिरोया और ध्यानस्थ हुए तो ''मैं कोन हूँ'' का जवाब मिलने लगा। डॉ. शिवाचार्यजी ने अपने इस खोज का नामकरण किया है – आत्म ध्यान।

अन्य ध्यान पद्धतियाँ कहती है – 'पहले ज्ञान, फिर ध्यान'। ध्यान योगी डॉ. शिवाचार्य कहते हैं कि ध्यान के बिना अर्जित ज्ञान मात्र शाब्दिक ज्ञान है, सूचना है। आज हमारा मस्तिष्क सूचनाओं का वैसा ही प्लेटफार्म बन गया है जैसे कम्प्यूटर। गूगल सर्च करो ओर दुनियाभर की शाब्दिक जानकारी प्राप्त कर लो, पर अनुभूति इसमें मिसिंग है। ऐसा ज्ञान शुष्क और मृत होता है। ध्यान योगी डॉ. शिवाचार्यजी ने आत्म ध्यान को आध्यात्मिक बना दिया है। पिछले तीन दशक में उन्होंने हजारों ध्यान शिबिरों में लाखों लोगों को आत्म ध्यान करवाया है। डॉ. शिवाचार्यजी कहते है – जैसे संगीत की कोई परिभाषा नहीं होती, धर्म नहीं होता वैसे ही ध्यान भी भाषा और धर्म के हर बंधन से मुक्त है।

समग्र जैन समाज में आत्मः ध्यान योग में विशेष खोजकर पूरे देश भर में ध्यान की जाग्रति एवं आत्म ज्ञान, भेद-विज्ञान व समाधि का प्रचार आपके माध्यम से हो रहा है।

आत्म–ध्यान साधना शिबीर

परम पावन सानिध्य :

गुरु आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री. शिवमुनिजी

संचालक : आत्मयोगी श्री शिरीष मुनिजी म.सा.

मुख्य प्रशिक्षिका : वीतराग साधिका निशा जैन

शिबिर एवं चातुर्मास स्थल

श्री वर्धमान श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सकल संघ, वर्धमान सांस्कृतिक भवन गंगाधाम–कोंढवा रोड, बिबवेवाडी, पुणे ४११०३७.

प्रतिदिन ध्यान योग साधना – प्रातः ८.०० से ८.५० तक

अहिंसा दिवस पर लाईव ध्यान प्रसारण – दिनांक २ अक्टूबर २०१९ प्रातः ८ से ११ बजे तक

विभिन्न टी.वी. चैनलों द्वारा फेसबुक आदि से भी लाईव होगा।

एक दिवसीय आत्म–ध्यान साधना बेसिक शिबिर

समय प्रात : १०.०० से सायं ०५.०० बजे तक

* १६ अगस्त २०१९ बुधवार
* १९ सितम्बर २०१९, शुक्रवार (प्रातः ६ बजे से १० बजे तक)
* ३० अक्तूबर २०१९ बुधवार

दो दिवसीय आत्म–ध्यान साधना आवासिय शिबिर

(मौन एवं ध्यान के साथ आवास सहित)

* १० से ११ अगस्त २०१९ शनिवार से रविवार
* २ से ३ अक्टूबर २०१९, बुधवार से गुरुवार

नोट : समय : प्रथम दिवस प्रात : ६.०० बजे प्रारंभ होकर अन्तिम दिवस सायं. ५.०० बजे पूर्ण होगा। (नये साधक भी भाग ले सकते है)

चार दिवसीय आत्म–ध्यान साधना गम्भीर शिबीर

(मौन एवं ध्यान के साथ आवास सहित)

* १७ से २० अगस्त २०१९, शनिवार से मंगलवार
* ३१ अक्टूबर से ३ नवम्बर २०१९, गुरुवार से रविवार
* १९ से २२ सितम्बर २०१९, गुरुवार से रविवार।

नोट : समय प्रथम दिवसीय प्रातः ८ बजे से प्रारंभ होकर अन्तिम दिवसीय सायं ५.०० बजे पूर्ण होगा।

सप्त दिवसीय आत्म–ध्यान साधना गम्भीर शिबिर

(मौन एवं ध्यान के साथ)

* ३ से १० नवम्बर २०१९, रविवार से रविवार

नोट : १ समय : ३ नवम्बर को सायं ७.०० बजे से प्रारंभ होकर १० नवम्बर को प्रातः ८ बजे पूर्ण होगा।

२. कम से कम चार दिवसीय गम्भीर शिबीर किये हुए साधक ही सप्त दिवसीय शिबीर में प्रवेश कर पायेंगे।

शिबीर के नियम :

१. पूर्व रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है।

२. सभी साधक समय पर पहुँचे एवं सभी गम्भीर शिबीर में साधकों का रिपोर्टिंग समय शिबिर प्रारंभ से दो घंटे पहले रहेगा।

३. बेसिक कोर्स किये हुए साधक ही गम्भीर शिबिर में प्रवेश कर पायेंगे।

४. सभी साधकों को गंभीर साधना शिबीर में पूर्ण मौन रहना होगा।

५. मोबाईल आदि साधना शिबीर प्रारम्भ होने से पहले जमा करवा देंवे एवं शिबिर काल में बाहर के किसी व्यक्ति से सम्पर्क नहीं कर पायेंगे।

६. शिबिर काल में साधकों को शिबीर स्थल पर ही रहना होगा।

७. आवास, निवास एवं भोजन व्यवस्था शिबिर स्थल पर रहेगी।

८. साधना के लिए सफेद, क्रीम रंग के ढीले वस्त्र लाएं। सामायिक के उपकरण साथ ला सकते हैं।

९. साधक आवश्यक सामग्री कपडे, चादर, योगासन हेतु दरी आदि साथ लायें।

Visit us our website : www.jainacharya.org
Email : shivacharyaji@yahoo.co.in
Contact No. : 9350111542 / 9355111542 •

कव्हर तपशील - ऑगस्ट २०१९

❖ **आचार्य शिवमुनिजी म.सा. चातुर्मास, पुणे**

आत्मध्यानी आचार्य सम्राट डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. व युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. आदि ठाणा १६ यांचा शिवाचार्य समवसरण वर्धमान सांस्कृतिक भवन, बिबवेवाडी, पुणे ३७ येथे भव्य चातुर्मास संपन्न होत आहे. चातुर्मास प्रवेश ११ जुलै २०१९ रोजी भव्य शोभायात्रेत हजारोंच्या उपस्थित संपन्न झाला.

येथे रोज सकाळी प्रार्थना, ध्यान, योगसाधना, प्रवचन, धार्मिक प्रशिक्षण, प्रतिक्रमण इत्यादी कार्यक्रम होत आहे. प्रवचनास रोज हजारो श्रावक-श्राविका येत आहेत.

दि. २१ जुलै २०१९ रोजी एक दिवसीय ध्यान साधना बेसिक शिबीर संपन्न झाले. यात सुमारे ७००० हजार लोकांनी सहभाग नोंदविला. सकाळी १० ते संध्याकाळी ५.३० पर्यंत शिबिराचे भव्य आयोजन संपन्न झाले. तसेच दोन दिवसीय, चार दिवसीय, ध्यान साधना शिबीराचे आयोजन संपन्न झाले.

या चातुर्मासात धार्मिक कार्यक्रमा सोबतच वेगवेगळ्या क्षेत्रातील मान्यवरांचे दर शुक्रवारी रात्री ८.०० ते १०.०० या वेळेत व्याख्यानाचे आयोजन करण्यात आले आहे. या अंतर्गत १९ जुलै रोजी ''आय डिड इट माय वे'' या विषयांवर चरित्र अभिनेता श्री. बोमन इरानी यांचे मोटिव्हेशन स्पीच झाले. या कार्यक्रमास भर पावसात ही सुमारे ४००० युवक उपस्थित होते.

श्री वर्धमान श्वेंताबर स्थानकवासी जैन श्रावक सकल संघ, पुणे यांच्यावतीने चातुर्मास सोहळ्याची जय्यत तयारी करण्यात आली आहे. श्री. प्रकाशजी रसिकलालजी धारीवाल परिवारा तर्फे अतिशय भव्य मंडप उभारण्यात आलेले आहे. संपूर्ण चातुर्मासात गौतमप्रसादीचा लाभ सौ. सुरेखा लखीचंदजी खिंवसरा परिवार यांनी घेतलेला आहे. श्री. राजेशजी नौपतलालजी सांकला परिवारा तर्फे भव्य ध्यान हॉल उभारण्यात आला आहे.

साधू व साध्वी यांच्या दर्शनासाठी विविध भागातून तसेच देशभरातून धर्मप्रेमी बांधव मोठ्या संख्येने पुणे येथे दाखल होत आहेत. या सर्वांची निवासाची उत्कृष्ट व्यवस्था जैन श्रावक सकल संघ यांनी केली आहे. चातुर्मासाच्या यशस्वीतेसाठी प्रकाश धारीवाल, विजयकांत कोठारी, पोपटलाल ओस्तवाल, विजय भंडारी, राजेशकुमार सांकला, अरुण शिंगवी, पन्नालाल लुणावत, रमेशलाल गुगळे, संजय सांकला, माणिकचंद दुगड, विजयकुमार धोका, अनिल नहार, आदेश खिंवसरा, रामलाल शिंगवी, दिलीप कटारिया, अशोक मुनोत, कांतीलाल बाफना, सुरेश गांधी, प्रकाश बोरा, कांतीलाल गुंदेचा, पारस छाजेड, पुखराज हिरण, जितमल कोठारी, अभय छाजेड, बाळासाहेब ओसवाल, प्रविण चोरबोले, गणेश ओसवाल, हरसुख बोरा, अविनाश कोठारी, सुभाष मुथा, विजय भटेवरा, अशोक लोढा, रमणलाल लुंकड, दिपचंद पारख, शिरीष भन्साळी, अविनाश चोरडिया, विमल बाफना आदी मंडळी तसेच युवक कार्यकर्ते व महिला मंडळाच्या पदाधिकारी विशेष प्रयत्नशील आहेत.

❖ **जैन सोशल ग्रुप, पुणे परिवार**

जैन सोशल ग्रुप पुणे परिवारातर्फे पुणे शहरात चातुर्मासासाठी आलेल्या सर्व संप्रदायाच्या साधू साध्वीसाठी वैय्यावच्च कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. गोडीजी मंदिर पुणे येथे चातुर्मास साठी विराजीत आचार्य श्री विश्वरत्नसागरजी म.सा. यांच्या बरोबर जैन सोशल ग्रुपचे श्री. दिलीपजी चोरबेले, श्री. वैभव कोठारी, श्री. प्रितम भटेवरा, श्री. पवन भंडारी इत्यादी कार्यकर्ते.

❖ **डॉ. मंजुश्रीजी म.सा. – अमृत महोत्सव**

श्रमण संघीय महा साध्वी डॉ. मंजुश्री म.सा. यांचा अमृत महोत्सव ७५ वा जन्मदिन जयंती जैनम साधना तीर्थ भिवरी, जि. पुणे येथे विविध कार्यक्रमाद्वारे संपन्न करण्यात आला.

❖ **सूर्यदत्ता गुरुरत्न पुरस्कारांचे वितरण**

पुणे येथील सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटच्या वतीने गुरुपौर्णिमेच्या निमित्ताने प्रा. शरदचंद्र दराडे, डॉ. विनोद शाह, अभिनेत्री वर्षा उसगांवकर यांना गुरुरत्न पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून योगगुरु डॉ. संप्रसाद विनोद, सामाजिक कार्यकर्त्या डॉ. ललिता जोगड, सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजय चोरडिया, उपाध्यक्ष सुषमा चोरडिया, उपस्थित होते.

❖ **श्री. कांतीलालजी लुंकड फाऊंडेशन, पुणे**

पुणे : संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराजांच्या पालखी सोहळ्यातील वारकऱ्यांसाठी श्री. कांतिलालजी लुंकड फाउंडेशनच्या वतीने आळंदी रस्त्यावर सॅपर्स पोलीस चौकीसमोर सलग पाचव्या वर्षी अत्यंत भव्य मंडप उभारुन पहाटे पाचपासून दिवसभरात वारकरी व भाविकांना जेवण देण्यात आले. या फाउंडेशनच्या अध्यक्षा पुष्पाजी लुंकड, विश्वस्त अमित लुंकड, अमोल लुंकड, जोत्स्ना लुंकड, सुभद्रा लुंकड, तरुण जोशी, अनुजा लुंकड–जोशी, राहुल डागलिया, रुपेश डागलिया व लुंकड रियाल्टीचे सुमारे २०० कर्मचारी कार्यरत होते. या दिवशी ५० हजार वारकऱ्यांना महाप्रसाद वाटप करण्यात आले.

❖ **श्री. संकेत देसर्डा, पुणे**

पुणे येथील श्री. संकेत मनोजजी देसर्डा नव्या युगाचा Digital व Start-up India चे एक यशस्वी नाव आहे. अनेक देशी व विदेशी वर्तमानपत्रांनी, जसे की Business Standard, Yahoo News, PTI, Business Today इ. यांनी त्याच्या कामाची दखल घेतली. त्याचे Social Media वर २ कोटी Follower आहे.

❖ **रविनंदा गृहप्रकल्प, पुणे**

पुणे येथील उद्योजक श्री. संतोषजी जैन, श्री. बिपीनजी भंडारी हे लुल्लानगर, पुणे येथे रविनंदा हा भव्य लक्झरी प्रकल्प उभा करीत आहेत. या प्रकल्पाचे भूमीपूजन नुकतेच संपन्न झाले. ●

श्री उवसग्गहरं स्तोत्र – सामुहिक पठण
पुणे– दि. २५ ऑगस्ट २०१९, दुपारी ४ ते ५

उद्योगपति व दानवीर श्री. रसिकलालजी धारीवाल यांच्या उपस्थितीत सन २०१७ साली महामंगलकारी श्री उवसग्गहरं स्तोत्राचे सामुहिक पठण वाणी भूषण श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. यांच्या सान्निध्यात संपन्न झाले होते. गतवर्षी भारत गौरव मुनिश्री पुलकसागरजी म.सा. यांच्या सान्निध्यात दुसऱ्यांदा सामुहिक पठण संपन्न झाले. यावर्षी तीसऱ्यांदा आचार्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. आदि ठाणा १६ यांच्या सान्निध्यात रविवार दि. २५ ऑगस्ट २०१९ रोजी दुपारी ४ ते ५ या वेळात शिवाचार्य समवसरण वर्धमान सांस्कृतिक भवन येथे संपन्न होत आहे. शोभाजी व जान्हवी धारीवाल यांनी या उवसग्गहरं स्तोत्राच्या पठणाला सहपरिवार उपस्थित राहण्याचे आव्हान केले आहे. ●